हर महिला अग्रसर... चूज़ टू चैलेंज (एक ललकार)

हम आज में ही चलते रहे, कुछ पसंदीदा, अनेक नापसंद इच्छाओं को स्वीकारते बस मुस्कराते आज में यूँ ही चलते रहे। खुद के सपने न देखे, सब के सपनों के साथ, बस सफर जिन्दगी में हंसते चलते रहे। हर चुनौती का सामना बस...आज की जरूरत मानकर, हर सम्भव कोशिश करते बस लड़ते रहे। हर पड़ाव में बस परिस्थितियों से संघर्ष करते...यूं ही आज में चलते रहे।

कुछ साल पहले मां की लिखी हुई उपयुक्त पंक्तियाँ को अगर हम आज के परिप्रेक्ष्य में समझें तो भी उनका अनुभव हमें हर परिस्थिति में संघर्ष करने के लिए प्रेरित करता है।

इसका उपयुक्त उदाहरण.. कोरोना महामारी लड़ाई के दौरान अनेक महिला योद्धाओं ने अपने साहस का परिचय दिया। उन विकराल परिस्थितियों में भी आगे बढ़कर हर मोर्चे पर अपनी सेवाएं प्रदान करने में जुटी रही। यह उनकी नेतृत्व शक्ति और क्षमता को प्रमाणित करता है। उनका इनसानों के प्रति सेवा समर्पित भाव और उनकी पीड़ा में मरहम लगा कर सुकून पहुंचाने की जिम्मेदारी लेना उन्हें अलग पहचान दिलाता है। दुनिया भर में फैले यह समाज का वह वर्ग है। जिनका निस्वार्थ सेवा व प्रेम भाव की वजह से मानवता का परचम लहरा रहा है। यही नहीं सृष्टि का सन्तुलन बनाए रखने की जिम्मेवारी भी उन्हीं के कंधों पर है। समाज के प्रति उनका भावात्मक नजरिया और जीने का अन्दाज के विभिन्न पहलुओं से एक

सीख और संकटों से लड़ने में ऊर्जा मिलती है। इसके सकारात्मक प्रभाव से सही दिशा-निर्देश सम्भव होने से लक्ष्यों को पूरा करने में मदद भी मिलती है।

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस 2021 में संयुक्त राष्ट्र संघ की थीम 'नेतृत्व में महिलाएं' 'पर प्रकाश डालना सुखद प्रयास रहा। **कोविड19 दुनिया में 'चूज टू चैलेंज' थीम के तहत.. हर एक को समान भविष्य प्राप्त कराना** रखा गया था। इस पहल के तहत दुनिया भर में लड़कियों और महिलाओं के अच्छे स्वास्थ्य की ओर अधिक ध्यान देना एक सराहनीय प्रयास जरूर है। समाज में उनको बराबरी का अधिकार व उनकी समान भागीदारी को बढ़ावा देने का लक्ष्य भी रखा गया। कई देशों ने लिंग संतुलन हासिल करने की ओर तेजी से बढ़ने की मांग भी रखी।

यूँ तो दुनिया भर में हर देश अपने ढंग से महिला दिवस एक वार्षिक उत्सव के रूप में मनाते है। महिलाओं की सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक उपलब्धियों का गुणगान किया जाता आ रहा है। महिलाओं को समर्पित यह दिन महत्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि इस दिन उन्हें समाज में अपने अस्तित्व की पहचान का एहसास कराया जाता है। महिलाओं के व्यक्तिगत और उनके प्रोफ़ेशनल लक्ष्यों को पूरा करने में उनकी लगन और मेहनत को स्वीकृति प्रदान करने का खास दिन होता है। यही नहीं उनके द्वारा किए हर सफल कार्यों और प्रयासों को सम्मानित भी किया जाने का चलन है। कई देशों में तो इस दिन महिलाओं के पक्ष में आंदोलन या मार्च सहित विभिन्न कार्यक्रमों में उनकी समस्याओं को लेकर झंडा लहराया जाता है।

यहां इतिहास के पन्नों से.. अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के दिलचस्प पहलुओं पर नजर डाले तो समझा जा सकता है। 1908 में शुरू हुआ महिलाओं के संघर्ष का सफर आज भी उस मुकाम पर नहीं पहुंचा है जिसकी महिलाएं हकदार है। इसकी शुरुआत उस समय तकरीबन 15000 महिलाओं ने न्यूयॉर्क शहर में वोटिंग अधिकारों की मांग, काम के घंटे कम करने और पुरुषों के समान वेतन मिलने के

लिए मार्च निकाला था। एक साल बाद 1909 में ही अमेरिका की सोशलिस्ट पार्टी की घोषणा के बाद 28फरवरी को पहला राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला दिवस मनाने का सुझाव 1910 में जर्मनी की सोशल लीडर क्वारा जेटकिन ने महिलाओं को अपनी माँगो को बढ़ाने के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाने पर जोर दिया। इस कान्फ्रेंस में 17देशों की लगभग 100 महिलाओं की उपस्थिति में महिला दिवस को अन्तर्राष्ट्रीय दर्जा प्राप्त हुआ। उस समय इसका प्रमुख उद्देश्य महिलाओं को वोट देने के अधिकार दिलवाना था। उस समय अधिकांश देशों में महिलाओं को वोट देन का अधिकार नहीं था। समाजवादी और साम्यवादी देशों में आंदोलन अपनाने से इसका दायरा बढ़ता गया। पहली बार स्विटजरलैंड, आस्ट्रिया,,डेनमार्क व जर्मनी में जूलियन कैलेंडर के अनुसार 19मार्च साल 1911 को अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया।

1975 में संयुक्त राष्ट्र ने महिला दिवस को आधिकारिक मान्यता प्राप्त हुई। तब से महिला दिवस को 8मार्च को वार्षिक उत्सव के रूप में मनाया जाता आ रहा है। उसकी पहली थीम थी 'सेलिब्रेटींग द पास्ट प्लानिंग फॉर द फ्यूचर' के साथ मनाने का चलन शुरू हो गया। 'महिला दिवस' का सफर हमेशा से ही चुनौतियों से भरा संघर्ष पूर्ण रहा।

आज भी समाज में अपनी पहचान बनाने और स्थिति सुनिश्चित और सुरक्षित करने के लिए अनेक मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। देश की अर्थव्यवस्था में महिलाओं के योगदान का उचित स्थान नहीं मिलता है.. जिसकी वह हकदार है। यही नहीं सामाजिक व्यवस्थाओं के प्रतिनिधियों का रवैया और उनकी रूढ़िवादी सोच महिलाओं के हितों की रक्षा में उठाये कदमों में बाधक भी बने हुए है। बस महिलाओं के सम्मान में मनाने वाले दिवसों के जाते ही.. उनकी ओर ध्यान हटाना सबसे सरल रास्ता अपनाना मनुष्यों की प्रकृति का एक हिस्सा बना हुआ है। महिलाओं के पलड़े में हमेशा से ही अधिक चुनौतियां बिन चाहे बिन मांगें उनकी

झोली में भरी ही रहती है। विश्वास माने हर स्थिति में महिलाओं के सहयोग बिना चाहे समाज हो या देश एक सुन्दर और सुदृढ़ व्यवस्था की कल्पना नहीं की जा सकती है।

देश की राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं की समान भागीदारी से ही देश हित परियोजनाओं को परिपूर्ण करने में अधिक मदद मिलती है। विश्वास मानें उसे आजमाइश कटघरे में खड़े न करके आजमा कर देखना ही एक दूसरे के प्रति नफा का समझौता साबित किया जा सकता है। किन्तु वास्तविकता यह है कि उसे अपने अधिकारों की रक्षा के लिए अभी मीलों दूर सफ़र तय करना बाकी है। पर यह भी न भूलें कि लड़ना फितरत उसकी और विजयी हासिल करना आदत है।

चलो एक दिवस ही सही, उनके सम्मान व नमन को यह समर्पित,

अभी बहुत कुछ कर गुजरना है, हर उस रास्ते चल कर जाना है,

जहाँ चुनौतियाँ कर रही प्रतीक्षा हमारी, सफलता के लिए मीलों चलेंगे,

नारी अस्तित्व ही, है मनुष्य पहचान, मातृ दिवस का सही मायने बूझो,

कोई दिवस नहीं मोहताज उसका, कोई तरीका नहीं, हम आभार कर सके।

गीतांजलि सक्सेना 2021